परिशिष्ट

परिशिष्ट क्र. 1

Devesh Thakur
Ph. D., D. Litt.

Former Head, Hindi Department, Ramnarain Ruia College, Mumbai,
P. G. Teacher & Research Guide, Bombay University, Mumbai.

प्रिय विश्वास पाटील,

तुम्हारा पत्र मिला। अच्छा लगा।

तुमने अपना शोधकार्य पूरा कर लिया, इस से प्रसन्नता हुई।

तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर बहुत जल्दी में दे रहा हूँ। विलम्ब-लगाव है, इसलिए तुम्हारा काम रुक गया।

भाई डॉ. पी. एस. ~~पाटील~~ पाटील जी को मेरा नमस्कार कहना।

शेष कुशल। सभी शुभकामनाओं के साथ,

तुम्हारा
देवेश ठाकुर

मुंबई
१२.६.२०००

B-23, Himalaya Society, Asalpha, Ghatkopar (West), Mumbai-400084.
Telephone : 5161446

प्रश्न 1. उपन्यासों को आपने 'गुरुकुल' और 'शिखर पुरुष' शीर्षक क्यों दिया? उद्देश्य के
~~अलग-अलग~~ शीर्षक के बारे में अपनी मनोभावना ~~प्रकट करें~~। विचार क्या है?

उत्तर: उपर्युक्त शीर्षकों के विषय में तो आपको स्पष्टीकरण देना चाहिए था। फिर भी
आपकी जिज्ञासा का उत्तर यह है कि 'गुरु-कुल' का अर्थ मैंने 'गुरुओं का
अर्थात् आज के अध्यापकों के परिवार (कुल) से लिया है।' शिक्षकों का
यह परिवार आज अपने विद्यार्थियों को शिक्षा देने के स्थान पर, अपने स्वार्थों
में लिप्त हो बहुत घटिया किस्म के जोड़-तोड़ में लिप्त है। शिक्षकों के इस
निर्लज्ज परिवार की असलियत का उद्घाटन करना ही इसका उद्देश्य रहा है।'
'गुरुकुल' से जुड़ी हुई कथा 'शिखर पुरुष' की है। शिक्षा-क्षेत्र के ये
'शिखर-पुरुष' अपने अन्दर से कितने गर्हित हैं, इसका उद्घाटन ही इस
उपन्यास का उद्देश्य और कथ्य है। ये दोनों उपन्यास मेरे अपने अनुभव
पर आधारित हैं। इनको लिख कर मैंने यह कहना चाहा है कि कुछ
अध्ययन विरोधी तत्वों ने शिक्षा के क्षेत्र में प्रवेश करके इसे आज के दिन
कितना गँदला बना दिया है।

प्रश्न 2. क्या आलोच्य उपन्यास लिख कर आपको संकटों का सामना करना पड़ा? यदि
संकटों का सामना करना पड़ा तो आपने उन संकटों का मुकाबला किस प्रकार
किया?

उत्तर: 'गुरुकुल' के प्रकाशन के बाद अध्ययन विरोधी और जोड़-तोड़ करने वाले
अध्यापकों में बड़ा आक्रोश उत्पन्न हुआ। एक वरिष्ठ अध्यापक महोदय
तो अपनी आँखें तरेरते हुए मेरे घर पर आ धमके। टेलिफोन से भी कुछ
धमकियाँ मिलीं। कुछ अध्यापकों ने मेरे चरित्र को लेकर एक उपन्यास
लिखना-लिखवाना चाहा। लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली। जो अध्यापक
महोदय मेरे घर आए थे, वे अब दिवंगत हो गए हैं। मैंने उनसे ~~[illegible]~~ इतना
भर कहा कि मैं केवल क्लास में पढ़ाता ही नहीं हूँ। सड़क पर खड़े
होकर ~~[illegible]~~ ज़ुबान भी चला सकता हूँ। और फिर बहुत से टैक्सी
ड्राइवर भी मेरे मित्र हैं। तुम्हारे लिए उनकी टैक्सी का एक पहिया काफी
होगा। इस वार्तालाप के पश्चात् उनकी सिट्टी गुम हो गयी और वे
चुपचाप चलते बने।

जहाँ तक 'शिखर-पुरुष' का संबंध है, उसके प्रकाशन के बाद
न तो मेरे पास कोई धमकी भरा फोन आया, न मैंने अपने पर कोई उपन्यास
लिखे जाने अथवा लिखवाये जाने की खबर सुनी और न ही कोई अध्यापक
मेरे पास आया। हाँ, जब 1996 में मैंने उसे महाराष्ट्र राज्य हिंदी
अकादमी के पुरस्कार के लिए भेजा तो उसे ~~[illegible]~~ काटने की बड़ी कोशिश की
गयी। परीक्षकों में से एक परीक्षक ने एक बहुत ही साधारण उपन्यास
3/ को इतने अंक दिए कि 'शिखर पुरुष' तथा उस उपन्यास को, तीनों
परीक्षकों के अंकों के जोड़ में बराबर अंक मिल गए। इस कारण एक
अन्य परीक्षक के पास दोनों उपन्यासों को परीक्षण के लिए भेजा गया।
उसने अपने मन्तव्य में यह स्पष्ट किया कि दोनों उपन्यासों में गुणवत्ता
की दृष्टि से कोई तुलना ही नहीं हो सकती। तो 'शिखर पुरुष' को
आदि लोगों के, विकट विरोध और षड्यंत्र के बावजूद उस वर्ष का
अकादमी का जैनेंद्र कुमार पुरस्कार मिल गया। इससे पहले भी ~~[illegible]~~
एक अन्य उपन्यास 'शून्य से शिखर तक' को मेरे एक मित्र ने
ज़बरदस्ती पुरस्कार के लिए भेज दिया था। उस पर भी मुझे यही जैनेंद्र कुमार
पुरस्कार दिया गया था।

प्रश्न-3. शिक्षा जैसे पवित्र-क्षेत्र में पनप रहे भ्रष्टाचार के खिलाफ आज के छात्र और अध्यापक कौन-सा कदम उठाएं। साथ ही शिक्षा-व्यवस्था के संदर्भ में अपने विचार प्रकट करें।

उत्तर: शिक्षा के क्षेत्र में सभी अध्यापक भ्रष्ट हैं, यह नहीं कहा जा सकता। हाँ, संस्कार विहीन अध्यापकों की जो खेप पिछले दशकों में आई है, उनके स्वभाव में अपने लिए अधिक से अधिक सुविधाएं जोड़ना प्राथमिक उद्देश्य बन गया है। उधर शिक्षण संस्थाओं के प्रशासन में भी यह बुराई बुरी तरह घर कर गयी है। छात्रों को ये भ्रष्ट अध्यापक और राजनीतिक छुटभैये नेता बरगलाते हैं। और वे बरगला जाते हैं। मैं भ्रष्टाचार को पनपाने में छात्रों की कोई भूमिका नहीं मानता। हाँ, वे भ्रष्टाचार को मिटाने में अहम भूमिका निभा सकते हैं। मुंबई में ऐसे कई कॉलेज हैं जहाँ अध्यापकों के व्यवहार और उनके कार्य निष्पादन के बारे में विद्यार्थियों की राय पूछी जाती है और उसे गम्भीरता से लिया जाता है। कुछ अवसरों पर संबद्ध अध्यापक से स्पष्टीकरण भी ली जाती है। इस व्यवस्था से अनेक अध्यापकों को न चाहते हुए भी अपने व्यवहार और शिक्षण में सुधार करना पड़ता है। मेरा तो यह निश्चित मत है कि यदि अध्यापकों की नियुक्ति Contract Basis पर कर दी जाये तो उस से स्थिति में निश्चित सुधार हो सकता है। लेकिन यह काम बड़ी मुश्किल का है। अनेक राजनेता भी शिक्षा-क्षेत्र के इस भ्रष्टाचार में लिप्त हैं। वे क्यों ऐसी व्यवस्था चाहेंगे जिससे उनके चहेते अध्यापकों पर कोई मुसीबत आए। आपने देखा होगा कि पिछले कुछ सालों से बड़े-बड़े राजनेता ही कॉलेज खोल रहे हैं। इससे उनकी लोकप्रियता भी बढ़ती है और दाम भी मिलते हैं। वास्तव में भ्रष्टाचार हमेशा ऊपर से शुरू होता है। और हमारी ऊपर की सारी व्यवस्था आज के दिन पूरी तरह भ्रष्ट हो चुकी है। शिक्षा, शिक्षक और विद्यार्थी तो इस व्यवस्था के बहुत छोटे पुर्जे हैं।

लेकिन इस सब के बावजूद शिक्षा-व्यवस्था में सुधार लाया जा सकता है। पहली बात तो नियुक्तियों को 2-3 साल के Contract Basis पर करने की है। किसी भी अध्यापक के कार्य निष्पादन का परीक्षण विद्यार्थियों को दिया जाना चाहिए। दूसरे, शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्रों में Reservation नहीं ही होना चाहिए। तीसरे पाठ्यक्रम में ऐसे विषय और ऐसी पुस्तकें रखी जानी चाहिए जिनसे विद्यार्थी को सामाजिक सरोकारों को और अपने उत्तरदायित्वों को निभाने की दिशा मिलती हो। चौथे, प्रत्येक अध्यापक का प्रति वर्ष अपने विषय से संबंधित कार्यों का मूल्यांकन होना चाहिए, कि उसने अपने विषय का क्या-क्या नया अध्ययन किया है, उसने कितने प्रपत्र या पुस्तकें लिखी हैं और उसने कक्षा के बाहर अपने विद्यार्थियों को कितना दिशा-निर्देश दिया है। अध्यापकों को कक्षा में विद्यार्थियों की उपस्थिति का भी पूरा हिसाब ईमानदारी के साथ रखना चाहिए। और मटरगश्ती करने वाले विद्यार्थियों को परीक्षा में बैठने से रोकने की व्यवस्था करनी चाहिए। लेकिन इसमें अनेक प्रशासनिक कठिनाइयाँ आ सकती हैं। इन कठिनाइयों को दूर किए बिना कोई सुधार संभव नहीं है।

परिशिष्ट क्र. 2

डॉ. देवेश ठाकुर जी से एक साक्षात्कार

स्थान - हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर।

तिथि - 26 मार्च, 1999.

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए ''देवेश ठाकुर के उपन्यासों में चित्रित अध्यापक वर्ग'' ('गुरुकुल' और 'शिखर पुरुष' के विशेष संदर्भ में) इस विषय पर शोध-कार्य कर रहा हूँ। अपने शोध निर्देशक, शिवाजी विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. पांडुरंग पाटील जी से मुझे सूचना मिली थी कि डॉ. देवेश ठाकुर 26 मार्च, 1999 को शिवाजी विश्वविद्यालय हिंदी प्राध्यापक परिषद के अधिवेशन में प्रमुख अतिथि के रूप में कोल्हापुर आ रहे हैं।

आलोच्य उपन्यास के संदर्भ में मेरे मन में पहले से ही कुछ प्रश्न निर्माण हुए थे। अत: विषय से संबंधित जिज्ञासाओं की जानकारी पाने के लिए प्रश्नावली बनाकर मैं शुक्रवार दिनांक 26 मार्च, 1999 को दोपहर 4:30 बजे शिवाजी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में पहुँच गया। उसी समय डॉ. देवेश ठाकुर विभागाध्यक्ष जी की केबिन में बैठकर कुछ सहयोगी अध्यापकों के साथ गपशप कर रहे थे।

मैं अंदर जाकर उनसे मिलने के लिए आतुर हो रहा था। फिर भी मन में कहीं संकोच था और थोड़ी-सी घबराहट भी। क्योंकि इतने बड़े लेखक के साथ किस प्रकार वार्तालाप कर पाऊँगा ? पाटील सर जी ने मेरा उनसे परिचय कराया। उनकी अपनत्वभरी मुस्कान से मन को आश्वस्ति मिली। मैंने साक्षात्कार के लिए उनसे प्रार्थना की। कोई भी काम जल्दी-से-जल्दी निपटना उनकी प्रवृत्ति है। उसी की प्रचिती मुझे आज हुई। उन्होंने जल्द ही मुझ से कहा - ''तुम्हारी जो भी जिज्ञासाएँ हो अभी पूछो। हम आराम से बातचीत करेंगे।'' तभी हम वहाँ से उठकर दूसरा खाली कमरा ढूँढ़ने लगे। हम हिंदी विभाग के कमरा क्र. 95 में जाकर बैठ गए।

कुछ औपचारिक परिचय के बाद धीरे-धीरे साक्षात्कार के लिए वातावरण बनने लगा। मैंने क्रमश: अपनी जिज्ञासाएँ प्रश्नों के रूप में उनके सम्मुख प्रस्तुत कर दी।

संक्षेप में उनके साथ हुए साक्षात्कार का ब्यौरा इस प्रकार है -

1. देवेश जी 'गुरुकुल' और 'शिखर पुरुष' उपन्यास लिखने की प्रेरणा आपको कैसे मिली ? इसका उद्देश्य क्या रहा है ?

- वास्तव में उपन्यास का विषय मनुष्य और उसका जीवन ही होता है। इस दृष्टि से उसके पात्र किसी भी वर्ग के प्रतिनिधि होते हैं और वे अपने वर्गों का दृष्टिकोण और विचारधाराओं को प्रस्तुत करते हैं। मुझे अध्यापन काल में जो अनुभव मिले उनका लेखा-जोखा इन उपन्यासों के माध्यम से पेश करने की कोशिश की है। अध्यापक की नौकरी तथा प्रोफेसर संबंधी 'इंटरव्यू' में काफी घिनौने अनुभव प्राप्त हुए। परीक्षकों का अज्ञान और भ्रष्ट राजनीति के कारण काबिल को नाकाबिल ठहराया जाता है। अपना नियत कार्य करके आत्मिक शांति पाने के लिए, इसे उजागर करने का प्रयास मैंने इन उपन्यासों में किया है।

2. 'गुरुकुल' लिखने पर भी 'शिखर पुरुष' लिखने की आवश्यकता आपने क्यों महसूस की ?

- 'गुरुकुल' उपन्यास के कारण 'मुझे' और 'गुरुकुल' को जिस प्रकार की मान्यता मिली है उसी ने मुझे 'शिखर पुरुष' लिखने के लिए उकसाया। मुझे लगता था कि इन गुरू घंटालों पर और कुछ लिखना बाकी रह गया था जो 'शिखर पुरुष' के रूप में सामने आया। इसे 'गुरुकुल' की अगली कड़ी ही समझिए।

3. उपन्यास का नायक डॉ. शीतांशु आप खुद हैं ?

- हाँ ! यह मेरी निजी आपबीति ही समझिए। क्योंकि लेखक के अनुभव बोध के बिना कोई भी कृति साहित्य हो ही नहीं सकती।

4. आपबीति होने के बावजूद भी आपने डॉ. शीतांशु को आधार क्यों बनाया ?

- डॉ. शीतांशु को आधार बनाने का उद्देश्य यह है कि यह कथा और व्यथा किसी एक व्यक्ति की निजी व्यथा न होकर सार्वजनिक हो जाए। इसके साथ अन्य अध्यापकों की दृष्टि वहाँ जाए जो इन समस्याओं से ग्रसित हैं।

5. क्या आप अध्यापक और पाठकों के सामने डॉ. शीतांशु का ही आदर्श रखना चाहते हैं ?

- हाँ ! उसे रखना तो पड़ेगा। अध्यापक को अपना कार्य पूरी लगन से करना चाहिए। उसे निर्भय बनकर हर एक समस्या का डटकर मुकाबला करना चाहिए। तटस्थ नहीं रहना चाहिए। दिनकर जी तो कहते हैं कि जो लोग तटस्थ रहते हैं, वे उतने ही गुनाहगार होते हैं जितने की अपराध करनेवाले।

6. डॉ. शीतांशु, ओछेलाल के खिलाफ कोर्ट में जाने के लिए डरते हैं। क्योंकि उनका नाम 'ब्लॅक लिस्ट' में जाएगा। क्या यह डॉ. शीतांशु की कमजोरी नहीं है ?

- नहीं ! वे अपने नाम से डरनेवाले व्यक्ति नहीं हैं। यह सुझाव उनकी सहयोगिनी और मित्रों ने दिया था।

7. 'गुरुकुल' और 'शिखर पुरुष' को आपके सहयोगी अध्यापकों ने पढ़ा, तब उनकी क्या प्रतिक्रिया हुई ?

- प्रतिक्रिया अच्छी ही हुई। .....अगर उन्होंने लिखी समीक्षाएँ पढ़ोगे तो और भी अच्छी तरह से वाकिफ हो जाओगे।

8. आपके विरोधकों ने इन उपन्यासों को पढ़ा तब उनकी क्या प्रतिक्रिया रही ?

- इन उपन्यासों के माध्यम से उनके सामने मैंने सिर्फ आइना रखने का कार्य किया है। जिसमें वे अपनी सूरत देख सकते हैं। फिर भी प्रतिक्रिया चाहते हो तो उनसे जाकर पूछ सकते हो, खाली हाथ नहीं लौटोगे।

9. 'गुरुकुल' उपन्यास में शोध-छात्र (थापा) द्वारा शोध-निर्देशक (डॉ. ओछेलाल) की टाँगें तुड़वाना तथा अध्यापकों के प्रति हीन शब्दों का प्रयोग करना कहाँ तक उचित है ?

- यहाँ उचित-अनुचित का प्रश्न ही नहीं है। ऐसे अध्यापकों की टाँगें तो तोड़ी ही जानी चाहिए। पहाड़ी विश्वविद्यालयों में ऐसे अध्यापकों को जान से मारने की घटनाएँ भी अखबारों में छप्ती हैं। रही बात हीन भाषा की। वे इस भाषा के लायक ही हैं। क्योंकि इन अध्यापकों के कार्य-व्यापार ही उसी प्रकार के हैं। अंधे को अंधा ही कहना चाहिए उसे सूरदास कहना मैं उचित नहीं समझता।

10. आलोच्य उपन्यासों में क्या शिवाजी विश्वविद्यालय से संलग्नित कुछ अध्यापक आपके लक्ष्य बने हैं ?

- नहीं ! शिवाजी विश्वविद्यालय का कार्य ठीक ढंग से चल रहा है।

11. क्या आप भाग्य में विश्वास करते हैं ?

- नहीं ! मैं भाग्य, भगवान पर विश्वास नहीं करता। मैं श्रम, त्याग, ईमानदारी को महत्त्व देता हूँ। अच्छी दिशा और जिद हो तो कुछ भी कार्य कठिन नहीं है।

12. आप अपनी कामयाबी का सच्चा हकदार किसे मानते हैं ?

- मैं अपनी कामयाबी का सच्चा हकदार मेहनत, मित्र और पत्नी को मानता हूँ।

13. आपकी छोटी बेटी भी शिक्षा क्षेत्र से जुड़ी है। आपने जिन समस्याओं का सामना किया, क्या उन्हीं समस्याओं से उन्हें भी जूझना पड़ा ?

- मेरी छोटी बेटी शिक्षा क्षेत्र से जुड़ी है। लेकिन मेरे क्षेत्र एवं समस्याओं की अपेक्षा उसका क्षेत्र सीमित है। वह अर्थशास्त्र की 'अध्यापिका' है। अत: मैंने 'प्रोफेसरशिप' एवं अन्य शिक्षा क्षेत्र से संबंधित जिन जटिल समस्याओं का सामना किया है उन समस्याओं को उसे जूझना नहीं पड़ा।

14. क्या वे भी साहित्य लिखती हैं ?

- नहीं ! उसे हिंदी साहित्य में रूचि नहीं है। वह ज्यादातर अंग्रेजी और मराठी ही बोलती है।

15. आपको कितनी भाषाओं का ज्ञान है ?

- मुझे हिंदी और अंग्रेजी दो भाषाओं का ही ज्ञान है एवं मैं उसी का उपयोग अभिव्यक्ति के लिए करता हूँ।

16. मुंबई से इतने वर्ष जुड़ने के बाद भी आपको मराठी नहीं आती ?

- मराठी थोड़ी बहुत मेरी समझ में आती है। मैं मराठी बोलने का प्रयास करता था। हमारे कॉलेज में मराठी की जानी-मानी कवयित्री शांता शेळके जी से मुलाकात हुई। उस दौरान मैंने मराठी

बोलने का असफल प्रयास किया तो उन्होंने मेरी मराठी को सुनकर मजाक में कहा - ''ठाकुर जी आप मराठी को खामखां बिगाड़ रहे हैं।'' तब से मैंने मराठी बोलना छोड़ दिया।

17. वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के बारे में आपकी राय क्या है ?

- आज समूची शिक्षा व्यवस्था राजनीति की शिकार बन रही है। जातिवाद और वर्गवाद के साथ-साथ इसमें व्यावसायिकता दिखाई दे रही है। भ्रष्टाचार और दुराचार बड़े पैमाने पर फैल रहा है।

18. अध्यापकों के बारे में आपकी क्या धारणा है ?

- अध्यापक 'अध्यापक' ही होता है। इस पेशे में सभी प्रवृत्तियों के लोग दिखाई देते हैं। अध्यापन को अपना आदर्श और लक्ष्य बनाकर ही अध्यापक को चलना चाहिए। कई अध्यापक इस आदर्श को भूलकर अन्य क्षेत्रों में अधिक रूचि लेते हैं, जिससे उनकी आय में वृद्धि हो। लेकिन वे शिक्षा क्षेत्र में उतनी ईमानदारी नहीं बरतते जितनी अन्य क्षेत्रों में बरतते हैं। मेरा अनुभव तो यह है कि बहुत कम अध्यापक गंभीरता के साथ अध्ययन और अध्यापन करते हैं। मेरा कहना तो यही है कि वे सही राह पर चले, उनकी दृष्टि सजग और व्यवसाय के प्रति प्रामाणिक हो।

19. संप्रति आप क्या कर रहे हैं और भविष्य में आपकी क्या संकल्पनाएँ हैं ?

- मैं लेखन कार्य गहराई में उतर कर करता हूँ। इसी कारण मुझे नई कृति निर्माण के लिए समय अधिक लगता है। मुझे डी. लिट. के लिए दस साल का समय लगा। अभी दस साल तक लिख सकूं इतनी सामग्री मेरे दिमाग में है। वर्तमान समय में ''आंतरानुशासन के संदर्भ में हिंदी साहित्य इतिहासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन'' विषय पर लेखन कार्य कर रहा हूँ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

अ.नं.	*लेखक का नाम*	*ग्रंथ का नाम*	*प्रकाशन और प्रयुक्त संस्करण*
1.	ठाकुर देवेश	गुरुकुल	संकल्प प्रकाशन, मुंबई द्वितीय संस्करण - 1992
2.	ठाकुर देवेश	शिखर पुरुष	नवयुगांतर प्रेस, मेरठ प्रथम संस्करण - मई, 1995

संदर्भ ग्रंथ

1.	(सं.)चुलकीमठ (डॉ.) शरेशचंद्र	उपन्यासकार श्रवण कुमार गोस्वामी	नवयुगांतर प्रेस, मेरठ प्रथम संस्करण - मई, 1995
2.	(सं.)चुलकीमठ (डॉ.) शरेशचंद्र	गुरु-कुल मूल्यांकन और प्रतिमूल्यांकन	संकल्प प्रकाशन, मुंबई प्रथम संस्करण - 1990
3.	(डॉ.) त्रिभुवनसिंह	हिंदी उपन्यास शिल्प और प्रयोग	हिंदी प्रचारक संस्थान, वाराणसी प्रथम संस्करण - 1973
4.	नास्तिकुमार (डॉ.) पी.	समाजवादी हिंदी उपन्यासों में चरित्रांकन	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा प्रथम संस्करण - 1997
5.	प्रेमचंद मुंशी	कुछ विचार	सरस्वती प्रेस, बनारस चतुर्थ संस्करण - 1949
6.	पाटील (डॉ.) पांडुरंग	देवेश ठाकुर और उनका उपन्यास साहित्य	क्वालिटी बुक्स पब्लिसर्स, कानपुर प्रथम संस्करण - 1998
7.	(सं.) पाण्डेय (प्रा.) सतीश	कथा-शिल्पि देवश ठाकुर	अरविंद प्रकाशन, मुंबई प्रथम संस्करण - 1986
8.	बांदिवडेकर (डॉ.) चंद्रकांत	आधुनिक हिंदी उपन्यास का सृजन और आलोचना	नॅशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली प्रथम संस्करण - 1985
9.	(डॉ.) बेचेन	आधुनिक हिंदी कथा साहित्य और चरित्र विकास	सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण, 1965

10.	भास्कर (डॉ.) विमल	हिंदी में समस्या साहित्य	जवाहर पुस्तकालय, मथूरा
11.	(सं.) मिश्र ब्रह्मदेव	पाण्डुलिपि	संकल्प प्रकाशन, मुंबई प्रथम संस्करण - 1993
12.	मिश्र (डॉ.) दुर्गाशंकर	अज्ञेय का उपन्यास साहित्य	हिंदी साहित्य भंड़ार, लखनऊ प्रथम संस्करण - 1976
13.	टंडन (डॉ.) प्रताप नारायण	हिंदी उपन्यास : उद्‌भव और विकास	कल्पकार प्रकाशन, लखनऊ प्रथम संस्करण - 1974
14.	श्री. सिंह बी. डी. और श्री. शास्त्री भूदेव	विद्‌यालय संगठन एवं सच्चालन	राजकिशोर अग्रवाल प्रकाशन,आगरा प्रथम संस्करण - 1960
15.	(सं.) यादव नंदलाल	देवेश ठाकुर : व्यक्ति, समीक्षक और कथाकार	मीनाक्षी प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण - 1985
16.	ठाकुर देवेश	काँचघर	मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ प्रथम संस्करण - 1981
17.	शुक्ल (डॉ.) भानुदेव	देवेश ठाकुर : प्रश्नों के घेरे में	संकल्प प्रकाशन, मेरठ प्रथम संस्करण - 1986
18.	(सं.) शिवबालन (डॉ.) रोहिणी	देवेश ठाकुर रचनावली-चार	संकल्प प्रकाशन, मुंबई प्रथम संस्करण - 1992
19.	(सं.) शिवबालन (डॉ.) रोहिणी	देवेश ठाकुर रचनावली-पाँच	संकल्प प्रकाशन, मुंबई प्रथम संस्करण - 1992
20.	(सं.) शिवबालन (डॉ.) रोहिणी	देवेश ठाकुर रचनावली-छः	संकल्प प्रकाशन, मुंबई प्रथम संस्करण - 1992
21.	(सं.) शिवबालन (डॉ.) रोहिणी	देवेश ठाकुर रचनावली-सात	संकल्प प्रकाशन, मुंबई प्रथम संस्करण - 1992

हिंदी शब्द-कोश

(सं.) चातक (डॉ.) गोविंद	आधुनिक हिंदी शब्द-कोश	तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण - 1986